ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

वर्ष : 73 ❖ अंक : 10 ❖ जनवरी, 2024

मंच पर विराजमान समिति के कार्याध्यक्ष श्री भारत भूषण महंत, केंद्रीय हिंदी निदेशालय और केंद्रीय हिंदी संस्थान, भारत सरकार के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी, असम के माननीय राज्यपाल **श्री गुलाब चंद जी कटारिया**, दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. मोहन एवं समिति के मंत्री डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया (क्रमशः बाएं से)।

दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए असम के माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद जी कटारिया और उपस्थित अतिथि एवं गणमान्य व्यक्ति गण।

विषय सूची

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ
	हिंदी विभाग		
	संपादकीय		5
1.	असमीया साहित्य में चित्रित भारत के स्वतंत्रता-संग्राम की चेतना	✍ डॉ. रीतामणि वैश्य	7
2.	'अपने-अपने पिंजरे' के उनवान और तजुर्बे पर एक सोच	✍ प्रो. डॉ. मनु	16
3.	हिंदी नाट्य साहित्य में मोहन राकेश का योगदान	✍ डॉ. राजकुमार मोबी सिंह	21
4.	हिंदी कविता और किसान जीवन	✍ प्रो. चंद्रकांत सिंह	25
5.	स्त्री अस्मिता : वर्तमान संदर्भ में	✍ डॉ. शैलजा	31
6.	'काला जल' उपन्यास और आंचलिकता	✍ डॉ. दिनेश साहू	35
7.	महाभोज : लोभ और लाभ की राजनीति	✍ डॉ. संजीव मंडल	42
8.	क्रांतिकारी पुरखिन मीरा	✍ डॉ. रीता नामदेव	50
9.	भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षण का बदलता स्वरूप	✍ डॉ. पवन कुमार दुबे	56
10.	ऑनलाइन शिक्षा प्रोग्राम प्रज्ञाता दिशा-निर्देश के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण : एक अध्ययन	✍ डॉ. रुचि दुबे ✍ डॉ. विधु शेखर पाण्डेय	63
11.	'ढिबरी टाइट' कहानी संग्रह में अभिव्यक्त समाज के विभिन्न स्वरूप	✍ पूर्णिमा सिंह	72
12.	मतांतरण का बोध-विचार एवं व्यवहार	✍ डॉ. कँवर चंद्रदीप सिंह ✍ लकी शर्मा	77
13.	'बात यह नहीं है' कहानी संग्रह में अभिव्यक्त लोक जीवन का सामाजिक पक्ष	✍ बर्णाली खाउंड	83
14.	स्त्री वेदना को प्रकट करता भोजपुरी लोकगीत	✍ सौरभ कुमार	88
15.	व्यंग्यात्मकता की दृष्टि से 'अंधेर नगरी' नाटक : एक अध्ययन	✍ जीनामणि बड़ो	92
16.	भारत को आत्मनिर्भर बनाने में हिंदी भाषा का योगदान	✍ गायत्री ✍ रोबिन	97
17.	समिति समाचार		102

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

आलेख

हिंदी कविता और किसान जीवन

प्रो. चंद्रकांत सिंह

प्रोफेसर (हिंदी विभाग)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय
विश्वविद्यालय,
धौलाधार परिसर-एक,
धर्मशाला, जिला-कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश -176215
09805792455
chandrakantonlineclass@gmail.com

शोध सार :

हिंदी कविता आरंभ से ही किसान-संवेदना को लेकर जागरूक रही है। चूँकि भारत कृषि प्रधान देश है, इसलिए आरंभ से ही हिंदी कविता किसान को आधार बनाकर अपने भावों, प्रतीकों आदि के द्वारा काव्य का मूल रचती आई है। आदिकाल में जहाँ सामंतीय-बोध केंद्रीभूत रहा, वहीं भक्तिकाल में आम जनता के सरोकार केंद्र में रहे। यही नहीं, रीतिकालीन कविता जो दरबारों में पोषित और पल्लवित हुई, उसकी भी मूल धुरी आम जनता ही रही, जो खेतों में काम करती है, प्रकृति के साथ अविरल तालमेल स्थापित करती है। इस तरह आदिकाल से लेकर मध्यकाल की समूची चेतना मूल रूप से किसानपरक रही। हालाँकि भारतेंदु युग में कुछ बुनियादी परिवर्तन हुए, तार्किकता और वैज्ञानिकता ने देश को प्रभावित किया, किंतु वहाँ भी नवजागरण की देश-बानी किसान ही रहे। शनैः शनैः द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता के नाम पर कई युगांतर घटित हुए, किंतु काव्य के मूल में सामान्य जनता ही रही जो बेकारी, महँगाई सभी को आत्मसात करती हुई प्रकृति के साथ सहजीवी के रूप में विकास करती रही। इस समूचे आलेख में इसी सामान्य जनता को देखने का लघु प्रयास किया गया है, जिसकी आत्मा खेतों में निवास करती है, जो भारत की मूल प्रकृति है, शक्ति है।

बीज शब्द :

सामंतीय जीवन, किसान-बोध, लोक, महानगरीय-बोध, श्रम की संस्कृति, भूमंडलीकरण ।

मूल आलेख :

कविता का जन्म समाज की चिंताधारा के बीच होता है। समाज की प्रवृत्तियों और घटनाओं का बारीक अंकन कविता में दिखता है। किसी भी देश की कविता हो, किसी भी समय की कविता हो, यदि उसमें तत्कालीन समय और समाज की चिंता नहीं है तो वह निश्चय ही निष्प्राण होगी। हिंदी काव्य-धारा ने अपनी आरंभिक यात्रा के साथ ही समय और परिवेश की व्याख्या की है। हिंदी कविता में